कमला नेहरू महिला महाविद्यालय

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

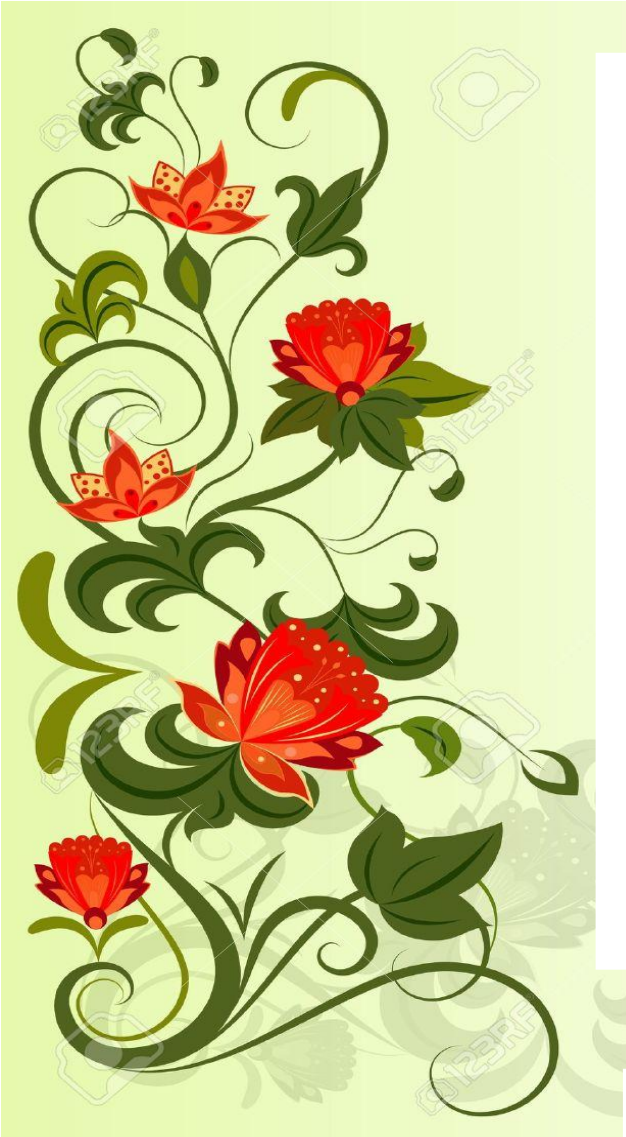

हिंदी भारती

सितम्बर – 2017

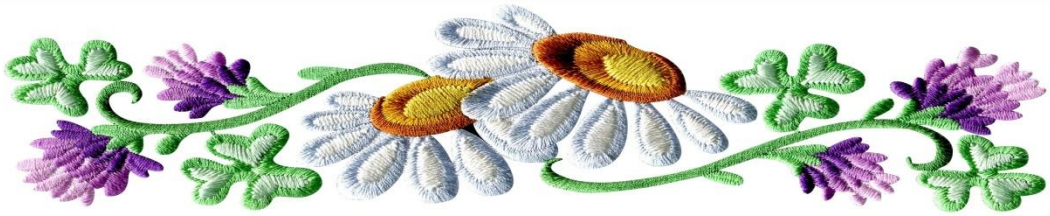

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. प्रियंका प्रियदर्शिनी परिडा

कु. शुभश्री शताब्दी दास

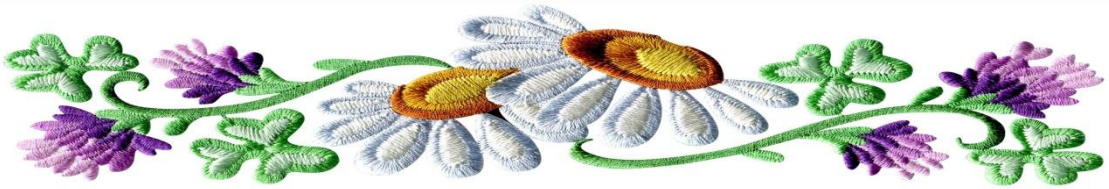

संपादकीय

" हिंदी भारती " सृजन के पलों की उपज है । एक छोटा सा कदम बड़े लक्ष्य की ओर । एक इरादा भाषा एवं साहित्य के माध्यम से समाज में परिवर्तन की कोशिश का । हिंदी विभाग की ओर से यह पहला प्रयास है, जिसमें कोशिश की गई है कि सृजन के साथ - साथ भाषा एवं साहित्य से सम्बंधित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी भी पाठकों तक समय - समय पर पहुँचती रहे । इस मासिक पत्रिका का प्रथम संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है ।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही **भारत की राजभाषा** होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये संपूर्ण भारत में **14 सितंबर** को प्रतिवर्ष **"हिन्दी-दिवस"** के रूप में मनाया जाता है। आइये इस अवसर पर हिंदी को जाने, पहचाने और अपनाये ।

निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल । बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।

— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है ।

- महात्मा गांधी

संघ की राजभाषा नीति

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप है

{संविधान का अनुच्छेद 343 (1)} ।

अनुच्छेद 343 संघ की राजभाषा

- इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था
- परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

राजभाषा आयोग और संसदीय समिति

- राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेंगे जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा और तत्पश्चात् ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर एक समिति गठित की जाएगी
- अपनी सिफारिशें करने में, आयोग अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।

- एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे
- समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

प्रादेशिक भाषाएं

- किसी राज्य का विधानमंडल-, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य भाषा के रूप में अंगीकार कर सकेगा
- परंतु जब तक राज्य का, विधि द्वारा, अन्यथा उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा
- परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों की भाषा

- उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी
- किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा
- किसी आदेश, नियम, विनियम के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है तो वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश

- संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए
- हिंदी विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके
- भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्दभंडार के लिए मुख्यत-ः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदीकी समृद्धि सुनिश्चित करें

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित,1967(

- जनवरी, 1965 का 26वां दिन अभिप्रेत है और इस अधिनियम के किसी अन्य उपबन्ध के सम्बन्ध में वह दिन अभिप्रेत है जिस दिन को वह उपबन्ध प्रवृत्त होता है
- 'हिन्दी' से वह हिन्दी अभिप्रेत है जिसकी लिपि देवनागरी है
- किसी बात के होते हुए भी हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही प्रयोग में लाई जाएगी
- उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात, राजभाषा के सम्बन्ध में एक समिति गठित की जाएगी
- इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करें और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करें

राजभाषा नियम की परिभाषा

'क्षेत्र क' से बिहार, झारखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, राजस्थान, दिल्ली, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह अभिप्रेत है

'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य और चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है

'क्षेत्र ग' अन्य राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

राजभाषा नियम की प्रमुख बातें

हिन्दी में प्रवीणता -

- मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से
- स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो
- या यह घोषणा कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है

राजभाषा नियम की प्रमुख बातें

- कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।
- कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में हो, हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।
- कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी कोई आदेश या सूचना हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे अविलम्ब उसी भाषा में दी जाएगी

- कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है
- कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

राजभाषा नियम की प्रमुख बातें

- केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में
- केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में हो
- कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में हो

राजभाषा संकल्प -1968

- यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एंव विकास की गति बढ़ाने के हेतु अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा
- हिंदी के साथ साथ सब भाषाओं के समन्वित विकास हेतु भारत सरकार द्वारा-राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा
- हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा या दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक का अध्ययन
- और अहिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी का अध्ययन

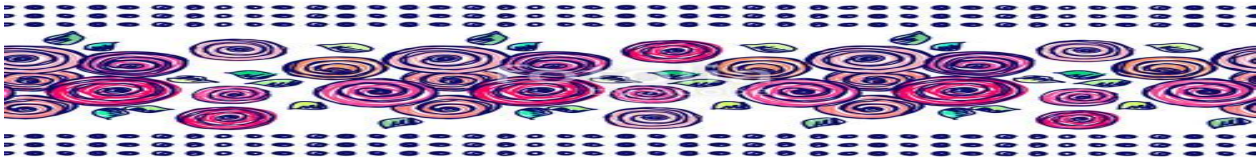

#134745891

हिंदी की दशा एवं दिशा

वह लोकतंत्र ही क्या, जो लोकभाषा में न चले?
भाषाई दृष्टि से देखें तो भारतीय लोकतंत्र पर यह सबसे बड़ा व्यंग्य है।

ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने कहा है कि भारत जाने वाले उसके राजनायिकों को हिंदी सीखने की जरूरत नहीं है, क्योंकि वहां सारा कामकाज अंग्रेजी में होता है। प्रधानमंत्री जूलिया गिलार्ड ने तो यहां तक कहा कि 'भारत एक अंग्रेजीभाषी लोकतंत्र है।' ऑस्ट्रेलिया के विदेशी मामलों के विशेषज्ञ इयान हाल ने अपनी सरकार को सलाह दी थी कि भारत में नियुक्त किए जाने वाले राजनायिकों को हिंदी इसलिए भी सिखाई जाए क्योंकि ऐसा करने से भारत का सम्मान होगा।

जब जापान, चीन, कोरिया, इंडोनेशिया, ईरान, तुर्की जैसे देशों में भेजे जाने वाले राजनायिकों को उन देशों की भाषा सीखनी अनिवार्य है तो भारत की उपेक्षा क्यों? इस पर ऑस्ट्रेलिया के विदेश व्यापार सचिव का कहना था कि जब भारत ही अपना सारा कामकाज अंग्रेजी में करता है तो ऑस्ट्रेलियाई राजनायिकों को क्या पड़ी है कि वे हिंदी सीखें?

वैदप्रताप वैदिक.डॉ -, दैनिक भास्कर, 14जून2012.

भाषा देश की संस्कृति, समृद्धि और सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

- किसी भी भाषा का कितना अच्छा और व्यापक प्रयोग हो सकता है यह भाषा पर नहीं बल्कि उसके प्रयोग करने वाले पर निर्भर करता है।

- विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी दूसरे स्थान पर है।
- महत्वपूर्ण
- जिस तरह हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होते हुए भी केवल आधे भारतीय ही हिन्दी जानते है वही स्थिति चीन में मंदारिन और इंग्लैंड में अंग्रेजी की है।
- अंग्रेजी संसार के मात्र साढे चार देशों की भाषा हैअमेरिका -, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और आधा कनाडा।
- ब्रिटेन या इंग्लैंड में अंग्रेजी के साथसाथ वेल्स-, स्कॉटिश और आयरिश भाषा भाषी हैं।-
- कनाडा में अंग्रेजी के समानांतर फ्रेंच भाषा भी चलती है।
- अमेरिका में भी केवल अंग्रेजी का ही वर्चस्व है यह धारणा भी गलत है, क्योंकि वहां पर भी स्पेनिश भाषियों की संख्या करोडों में हैं।
- अंग्रेजी में मूल शब्द मात्र उपलब्ध में ढाई लाख से भी अधिक मूल शब्दहजार है जबकि हिन्दी 10 जैसे सूरज के लिए अंग्रेजी में केवल .हैSUN मिलेगा जबकि हिन्दी में इसके लिए सूर्य, सूरज, रवि, आदित्य, भानु, भास्कर, दिनकर, दिवाकर आदि शामिल हैं।
- भारत के करोड़ लोग ही अंग्रेजी बोलना 4 नमें से सिर्फकरोड़ लोग शिक्षित है जि 65, लिखना एवं पढना जानते है और बाकि करोड़ लोग या तो अपनी मातृभाषा पर निर्भर है या 61 फिर हिन्दी।
- एक आकलन के अनुसार भारत में प्रतिशत दूसरे दर्जे की नौकरियों 15 प्रतिशत पहले दर्जे और 5 रे दर्जे की नौकरियों के लिए अंग्रेजी जानने की आवयकता नहीं प्रतिशत तीस80 को छोड दे तो शेष है।
- मात्र ढाईतीन वर्षों में सूचना-, संचार और मनोरंजन से जुड़े सभी क्षेत्रों में हिन्दी की स्थिति और अधिक प्रभावी और मजबूत हुई हैं.
- भारतीय भाषाओं पर आधारित सूचना प्रौद्योगिकी का बाजार अब सालाना से अधिक है। करोड़ 600
- राजनेताओं, नौकरशाहों, अभिनेताओं और खिलाड़ियों के साथ विदेशों में हो रहे अपमान पर हम त्वरित प्रतिक्रिया व्यक्त करते है परंतु अपनी भाषा के अपमान के मुद्दे पर ?
- परंतु यह वह हिन्दी है जिसने टीवी के समाचार चैनलों के महासंग्राम में अंग्रेजी के न्यूज़ चैनलों को टीआरपी मार्केट से खदेड़ रखा हैं।
- यह वह हिन्दी है जिसके अखबारों ने भारत के टॉप टेन यानी अग्रणी दस के समूह में आज भी अपना स्थान सुरक्षित कर रखा है जबकि अंग्रेजी का एक भी अखबार आज तक इस श्रेणी में स्थान नहीं बना सका है।

हम आज कहाँ हैं? और आगे रास्ता क्या है.....

एक अरब से भी अधिक बहुभाषी भारतवासियों को परस्पर समीप लाने में सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा प्रौद्योगिकी एक अहम् भूमिका निभा सकती है।

भाषा निर्धारण कैसे करें ? निम्न प्रक्रिया अपनाएं

Start=> Settings=> Control Panel=>

Regional & Lang options=>

Language=> Details=> Keyboard=>

Add=>Hindi Indic IME1 (V 5.0)

=> Apply

हिंदी में काम बहुत आसान

वर्डपॉवर प्वांइट फाइल खोलिए/एक्सेल/

Alt+Shift से फॉंट परिवर्तन करें

दाँयी ओर नीचे आइकॉन आएंगे 5

टूलबार से हिंदी)HI) अथवा अंग्रेज़ी (EN) चुनें

वांछित कुंजीपटल का चयन करें

हिन्दी टंकण भी आसान है, प्रयास तो करें

हिन्दी में हो व्यवहार तो बढ़े संबंध, बढ़े व्यापार

हिन्दी हमारे आत्मसम्मान का प्रतीक है

#134745891

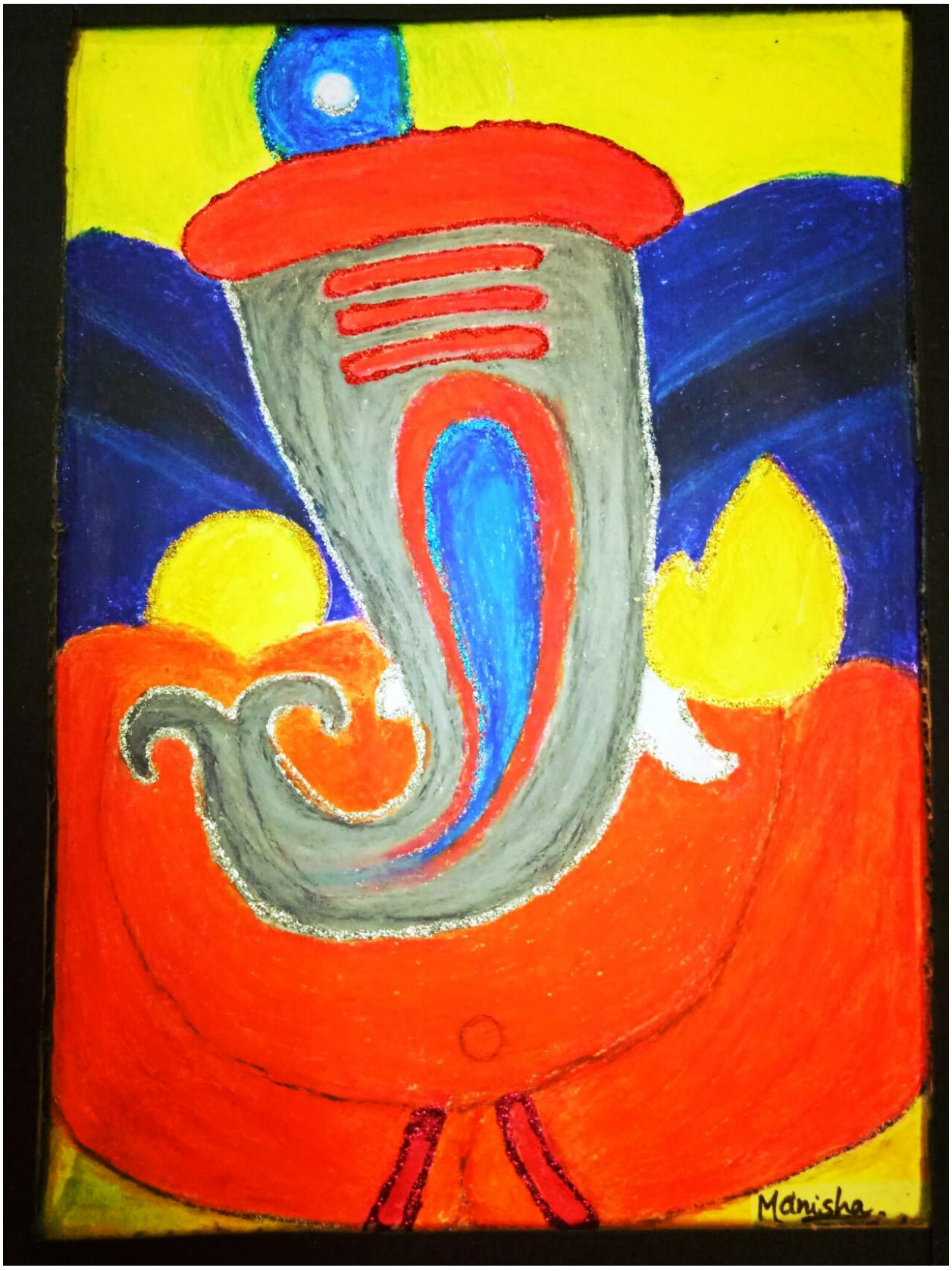
Manisha

हरिशंकर परसाई

हरिशंकर परसाई (२२ अगस्त, १९२४ - १० अगस्त, १९९५) हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंगकार थे। उनका जन्म जमानी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ था। वे हिंदी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के–फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने–सामने खड़ा करती है, जिनसे किसी भी व्यक्ति का अलग रह पाना लगभग असंभव है। लगातार खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और

जबलपुर से 'वसुधा' नाम की साहित्यिक मासिकी निकाली, नई दुनिया में 'सुनो भइ साधो', नयी कहानियों में 'पाँचवाँ कालम' और 'उलझी–उलझी' तथा कल्पना में 'और अन्त में' इत्यादि कहानियाँ, उपन्यास एवं निबन्ध–लेखन के बावजूद मुख्यत: व्यंग्यकार के रूप में विख्यात। परसाई मुख्यतः व्यंग -लेखक है, पर उनका व्यंग केवल मनोरजन के लिए नही है। उन्होंने अपने व्यंग के द्वारा बार-बार पाठको का ध्यान व्यक्ति और समाज की उन कमजोरियों और विसंगतियो की ओर आकृष्ट किया है जो हमारे जीवन को दूभर बना रही है। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं शोषण पर करारा व्यंग किया है जो हिन्दी व्यंग -साहित्य में अनूठा है। उनकी मान्यता है कि सामाजिक अनुभव के बिना सच्चा और वास्तविक साहित्य लिखा ही नही जा सकता। परसाई जी मूलतः एक व्यंगकार है। सामाजिक विसंगतियो के प्रति गहरा सरोकार रखने वाला ही लेखक सच्चा व्यंगकार हो सकता है। परसाई जी सामायिक समय का रचनात्मक उपयोग करते है। उनका समूचा साहित्य वर्तमान से मुठभेड़ करता हुआ दिखाई देता है। परसाई जी हिन्दी साहित्य में व्यंग विधा को एक नई पहचान दी और उसे एक अलग रूप प्रदान किया, इसके लिए हिन्दी साहित्य उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

- *कहानी–संग्रह*: हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव।
- *उपन्यास*: रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, ज्वाला और जल।
- *संस्मरण*: तिरछी रेखाएँ।
- *लेख संग्रह*: तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेइमानी की परत, अपनी अपनी बीमारी, प्रेमचन्द के फटे जूते, माटी कहे कुम्हार से, काग भगोड़ा, आवारा भीड़ के खतरे, ऐसा भी सोचा जाता है, वैष्णव की फिसलन, पगडण्डियों का जमाना, शिकायत मुझे भी है, सदाचार का ताबीज, विकलांग श्रद्धा का दौर, तुलसीदास चंदन घिसैं, हम एक उम्र से वाकिफ हैं।

हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं,,,,,

- मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता : आचार्य विनोबा भावे

- जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता : डॉ. राजेंद्र प्रसाद

- हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है : राहुल सांकृत्यायन

- हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है : सुमित्रानंदन पंत

- हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है : कमलापति त्रिपाठी

- 'मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है': लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

- हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी : सी. राजगोपालाचारी

- प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती : सुभाषचंद्र बोस

दोस्त

एक काम करना, थोड़ी सी
मिट्टी लेना, उससे दो प्यारे से
दोस्त बनाना।

इक तुझ जैसा..... एक मुझ जैसा.....
फिर उनको तुम तोड़ देना।

फिर उनसे दोबारा दो दोस्त बनाना,
इक तुझ जैसा.... एक मुझ जैसा....

ताकि तुझ में कुछ-कुछ मैं रह जाऊँ
और मुझ में कुछ-कुछ तुम रह जाओ।

कुछ तुम जैसा कुछ मुझ जैसा....

+3 2nd year Arts

हिंदी सम्मान

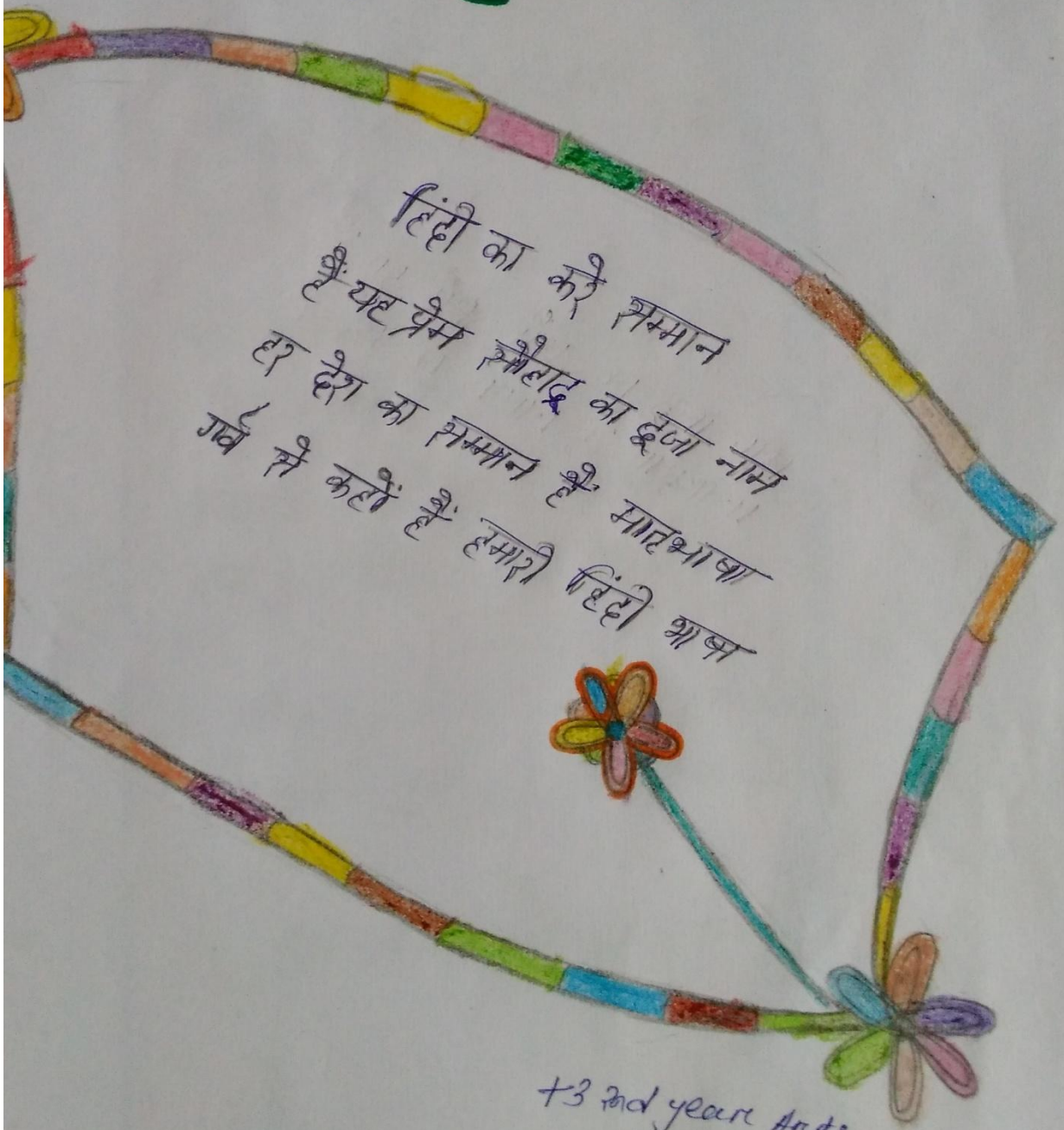

हिंदी का करें सम्मान
है यह प्रेम सौहार्द्र का दूजा नाम
हर देश का सम्मान है मातृभाषा
गर्व से कहते हैं हमारी हिंदी भाषा

+3 2nd year Arts
हिंदी विभाग
लिजा मिश्र

सीखो

सैनिक से बलिदान सीखो,
पेड़ों से झुक जाना ।

बैल से मेहनत करना सीखो,
पत्थर से मज़बूत बनना ।

छत से तुम छाँव देना सीखो,
सूरज से नियमित बनना ।

मोमबत्ती से रोशनी करना सीखो,
उजाले से फैल जाना ।

मूर्ति से सहन करना सीखो,
ईश्वर से माफ़ कर देना ।

इस धरती पर तुम आए हो तो,
कुछ अच्छा सीख कर ही जाना ।

- स्तुति प्रज्ञा दास
+3 हिन्दी विभाग

शिक्षा

हो जो कोई असभ्य,
उसे सभ्यता का पाठ पढ़ा दे..

अज्ञानी के मन में
जो ज्ञान का दीप जला दे...

हर दर्द की दवा जो बता दे...
वो है शिक्षा,

वस्तु की सही उपयोगिता जो
समझाए
वो है शिक्षा।

संकलित: सोनालि राउत
+3 2nd yr.

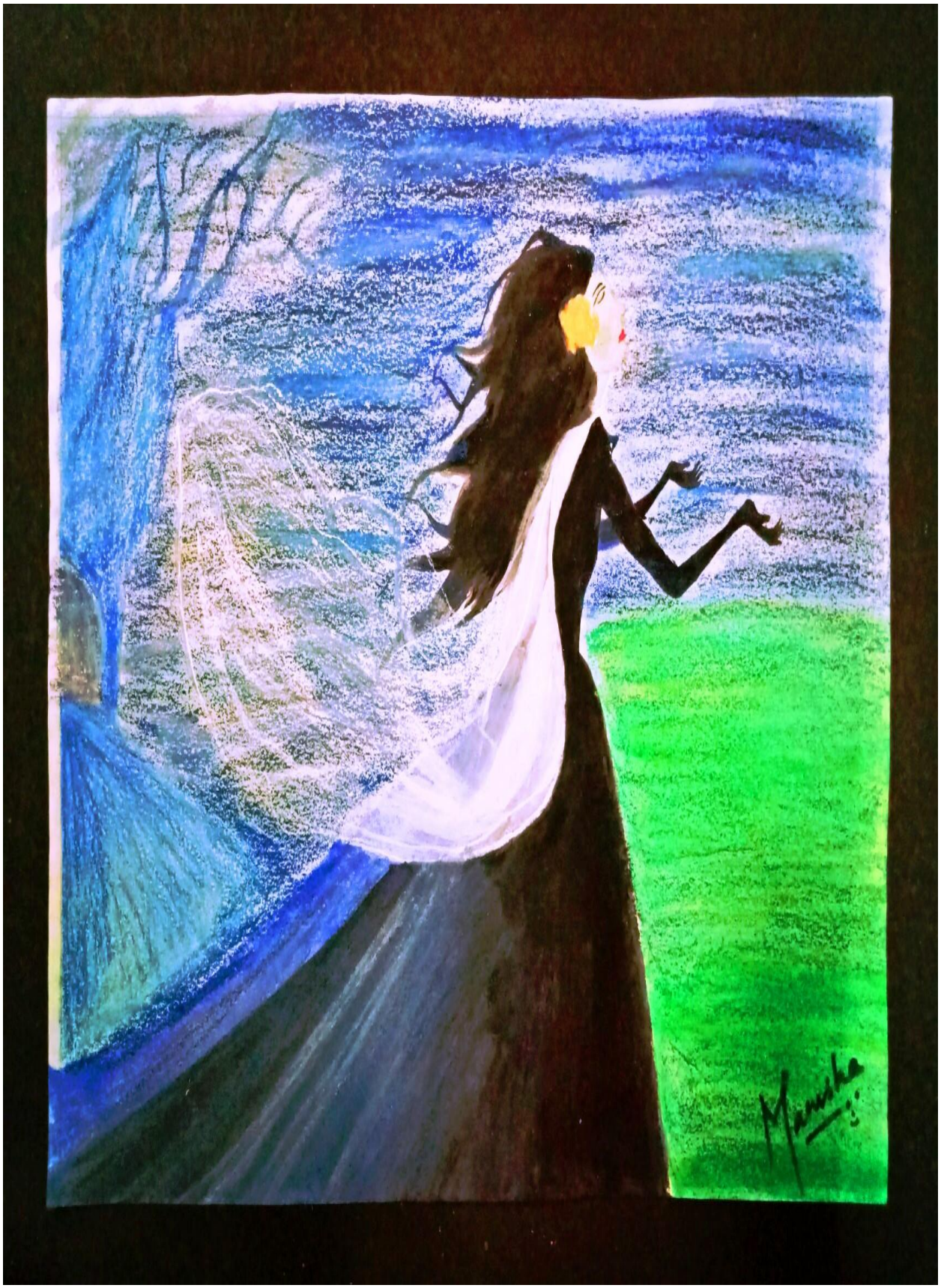

मेरा पन्ना

जीवन क्या है
यह एक सुहाना सफ़र है
जहाँ सबके पास उड़ने के लिए पर है
उड़ते पंछी की प्यास है ये
पुराने लम्हों की मिठास है ये
है यह बहती नदी की तरह
जो आती-जाती पुनः पुनः
चलती जाती है निरन्तर
मिल जाती सागर में बहकर
यह हम सबकी सोच है
जिसकी सीमा नहीं है
यह ऊँचे पर्वत की चोटी है
गहरे पानी का मोती है।

— स्मृति प्रभा दास
+3 हिंदी विभाग

मन्नू भंडारी

मन्नू भंडारी (जन्म ३ अप्रैल १९३१) हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानीकार हैं। मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में जन्मी मन्नू का बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। लेखन के लिए उन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया। उन्होंने एम ए तक शिक्षा पाई और वर्षों तक दिल्ली के मीरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। धर्मयुग में धारावाहिक रूप से प्रकाशित उपन्यास आपका बंटी से लोकप्रियता प्राप्त करने वाली मन्नू भंडारी विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में

कहानी

- एक प्लेट सैलाब (१९६२) `
- मैं हार गई (१९५७),
- तीन निगाहों की एक तस्वीर,
- यही सच है (१९६६),
- त्रिशंकु'
- आंखों देखा झूठ'

उपन्यास

आपका बंटी' (१९७१)
`एक इंच मुस्कान'(१९६२)

नाटक `बिना दीवारों का घर' (१९६६) विवाह विच्छेद की त्रासदी में पिस रहे एक बच्चे को केंद्र में रखकर लिखा गया उनका उपन्यास `आपका बंटी' (१९७१) हिन्दी के सफलतम उपन्यासों में गिना जाता है। लेखक और पति राजेंद्र यादव के साथ लिखा गया उनका उपन्यास `एक इंच मुस्कान' (१९६२) पढ़े लिखे आधुनिक लोगों की एक दुखांत प्रेमकथा है जिसका एक एक अंक लेखक-द्वय ने क्रमानुसार लिखा था।

मन्नू भंडारी हिन्दी की लोकप्रिय कथाकारों में से हैं। नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार के बीच आम आदमी की पीड़ा और दर्द की गहराई को उद्घाटित करने वाले उनके उपन्यास `महाभोज' (१९७९) पर आधारित नाटक अत्यधिक लोकप्रिय हुआ था। इसी प्रकार 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' नामक फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हुई थी और उसको १९७४ की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त उन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, व्यास सम्मान और उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत।

बेटी

बेटी बनकर आई हूँ
माँ-बाप के जीवन में!
बसेरा होगा कल मेरा किसी और के आँगन में।
क्यों ऐसी रीत है बनाई,
कहते हैं कल तू होगी पराई।
दे के जनम पाल-पोसकर जिसने हमें बड़ा किया,
और वक्त आया तो उन्हीं हाथों ने हमें
दूसरे के घर में विदा किया।
टूटकर बिखर जाती है हमारी जिन्दगी वहीं,
और उस बंधन में प्यार मिले
ये जरूरी तो नहीं....
क्यों रिश्ते हमारे इतने अजीब होते हैं,
क्या बस यही हम बेटीयों का नसीब होता है?

ड़ी अनुराधा रेड्डी
+3. 2nd yr

नारी का सम्मान

न जाने यह मनुष्य की कैसी मूढ़ता है,
जीवन के ज्योतिर्मय स्रोत को ध्वंस करने
की यह कैसी विवशता है ?
माँ पुकार कर जिसके आंचल में खेलता है,
बड़ा बनकर उसी मातृरूपा को जन्म होने से
क्यों वँचित करता है ?
किस प्रकार की उसकी अज्ञता है ?
जिसे काली, लक्ष्मी के रूप में पूजता है,
हानी पँहुचा रहा उसकी मर्यादा को
क्या इन्सान बनना ही नारी का अपराध है ?
ऐसी परम्परा, ऐसी सँस्कृति पर धिक्कार है।
जहाँ केवल सीताजी को देना पड़ी अग्नी-परीक्षा
ममता, प्रेम का जिसने सदा ही अमृत दिया
दुर्गा की ममता से जीवन का
संचालन होता है,
काली के क्रोध से विश्व विध्वंस होता है
नारी सामान्य नहीं वह एक ज्वालामुखी सी है
जिस को सम्मान देना हमारा कर्तव्य है।

श्रद्धान्जली भउल
+3 प्रथम वर्ष कला

भ्रष्टाचार

एक-दो, एक-दो
भ्रष्टाचार को फेंक दो,

जब से आया है दुनियाँ में भ्रष्टाचार,
तब से लोग कर रहे हैं खुब दुराचार,
इसकी छाया बन रही है सर्वव्यापि
पर समाज के प्रति यह है पापी.
है नेता भ्रष्टाचारी, तो है दुनियाँ दुराचारी.
हे भगवान! पकडो बैंय्या और पार करो नैय्या,

लोगों! भ्रष्टाचार को मारो ऐसे गोले,
ताकि हर बच्चा सिर्फ यही बोले;
कि.....
एक-दो, एक-दो;
भ्रष्टाचार को फेंक दो.

प्रियंका प्रियदर्शिनि पण्डा
+3 2nd yr

चुटकले

1. एक कंजुस आदमी की अंतिम यात्रा,
पहला बेटा - पिताजी को एंबुलेंस में ले चलते हैं।
दूसरा - एंबुलेंस महंगी है, ठेले में ले चलें।
तीसरा - साइकिल पर ले चलते हैं।
ये सुनकर कंजुस पिता उठकर बोला -
मेरा कुर्ता और जूते ला दो, मैं पैदल ही चला जाऊँगा ....

2. भूगोल की कक्षा में गंगा पर चर्चा हो रही थी।
अध्यापक : बताओ गंगा कहाँ से निकलती है और कहाँ जाकर मिलती है।
गोलू : सर गंगा स्कूल आने के बहाने घर से निकलती है और मंदिर के पीछे जाकर कालू से मिलती है!

KADAMBINI PAN
+32nd yr

एक तिनका

मैं घमंडों में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।

मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा,
लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे,
ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भागी।

जब किसी ढब से निकल तिनका गया,
तब 'समझ' ने यों मुझे तभी दिया।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

नाम - रितू पर्णा पलेई

यादों के गलियारों से

प्रेमचंद जयंती के अवसर पर "प्रेमचंद का कथा सहित्य" विषय पर एकदिवसीय संगोष्ठी की कुछ स्मृतियाँ

धन्यवाद